पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़

(छ,ग, भाासन के अधिनियम क्रमांक 26 सन् 2004 द्वारा स्थापित)

कोनी – बिरकोना मार्ग, बिलासपुर (छ,ग,) 495009 दूरभाष क्रमांक : (07752) 240715

www.pssou.ac.in E-mail-registar@pssou.ac.in

पाठ्यक्रम

बी.ए.

समाजशास्त्र

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

बी.ए. प्रथम वर्ष
समाजशास्त्र का परिचय
(प्रथम प्रश्नपत्र)

खण्ड (1)

अध्याय 1 : समाजशास्त्र का अर्थ

समाजशास्त्र का अर्थ, समाजशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र, समाजशास्त्र की विषय वस्तु, समाजशास्त्र की प्रकृति

अध्याय 2 : समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

परिप्रेक्ष्य का अर्थ, समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का अर्थ, समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, समाजशास्त्र का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध

अध्याय 3 : समाजशास्त्रीय अध्ययनों का वैज्ञानिक और मानविकी अभिमुखन

अभिमुखन का अर्थ, समाजशास्त्रीय अभिमुखन, समाजशास्त्रीय अभिमुखन के प्रकार, वैज्ञानिक अभिमुखन, वैज्ञानिक अभिमुखन का विकास, मानवतावादी अभिमुखन, मानवतावादी अभिमुखन का अर्थ, मानतावादी अभिमुखन का विकास

अध्याय 4 : मौलिक अवधारणाएँ

समाज का अभिप्राय, समाजशास्त्र में समाज का अर्थ, समाज की विशेषताएँ, सामाजिक सम्बन्धों की मनोवैज्ञानिक स्थिति, समाज की अन्य विशेषताएँ, समाज तथा एक समाज में अन्तर

खण्ड (2)

अध्याय 5 : समुदाय एवं समिति

समुदाय की संकल्पना, समुदाय का अर्थ एवं परिभाषाएँ, समुदाय के आधार या आवश्यक तत्व, समुदाय की विशेषताएँ, समुदाय के प्रकार, सीमावर्ती समुदायों के उदाहरण, समिति की संकल्पना, समिति का अर्थ एवं परिभाषाएँ, समिति की विशेषताएँ, समिति के कुछ उदाहरण

अध्याय 6 : संस्थाएँ

संस्था का अर्थ एवं परिभाषाएँ, संस्था की उत्पत्ति एवं विकास, संस्था की विशेषताएँ, संस्था के कार्य

अध्याय 7 : सामाजिक समूह

सामाजिक समूह का अर्थ एवं परिभाषाएँ, समूह निर्माण के तत्व, सामाजिक समूह की विशेषताएँ, समूह का अर्थ, समूहों का वर्गीकरण, प्राथमिक समूह का अर्थ तथा परिभाषाएँ, प्राथमिक समूहों की विशेषताएँ, प्राथमिक समूहों का महत्व, द्वितीयक समूह का अर्थ एवं परिभाषाएँ, द्वितीयक समूह की विशेषताएँ, द्वितीयक समूह का महत्व, सामाजिक संरचना, सामाजिक संरचना का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक संरचना की विशेषताएँ, सामाजिक संरचना के तत्व

अध्याय 8 : प्रस्थिति एवं भूमिका

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

प्रस्थिति का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक प्रस्थिति के प्रकार, अर्जित प्रस्थिति, अर्जित प्रस्थिति के आधार, भूमिका का अर्थ एवं परिभाषाएँ, भूमिका की विशेषताएँ, प्रस्थिति एवं भूमिका में सम्बन्ध, प्रस्थिति एवं भूमिका का समाजशास्त्रीय महत्व

अध्याय 9 : परिवार एवं नातेदारी

परिवार का अर्थ एवं परिभाषाएँ, परिवार की विशेषताएँ, संयुक्त परिवार का अर्थ एवं परिभाषाएँ, संयुक्त परिवार के लाभ, संयुक्त परिवार के दोष, संयुक्त परिवार के विघटन के कारण, संयुक्त परिवार के प्रकार, संयुक्त परिवार में हो रहे परिवर्तन, केन्द्रीय परिवार का अर्थ एवं परिभाषाएँ, केन्द्रीय परिवार के लक्षण, केन्द्रीय परिवार के लाभ, केन्द्रीय परिवार के कार्य, नातेदारी का अर्थ एवं परिभाषाएँ, नातेदारी के प्रकार, नातेदारी की श्रेणियाँ, नातेदारी की रीतियाँ

अध्याय 10 : धर्म

धर्म का अर्थ एवं परिभायाएँ, धर्म की प्रमुख विशेषताएँ, सामाजिक नियंत्रण में धर्म की भूमिका, शिक्षा का अर्थ एंव परिभाषाएँ, सामाजिक नियन्त्रण में शिक्षा की भूमिका, शिक्षा के प्रकार या स्वरूप, राज्य का अर्थ एवं परिभाषाएँ, राज्य के मौलिक तत्व, राज्य के कार्य, सामाजिक नियंन्त्रण में राज्य की भूमिका, जाति तथा राजनीति, जाति का अर्थ, जाति का राजनीतिक स्वरूप, जाति तथा राजनीति में अन्तःक्रिया, दबाव समूह का अर्थ एवं परिभाषाएँ, दबाव समूह की विशेषताएँ, भारत में प्रमुख दबाव समूह, राजनीतिक दलों का प्रमुख कार्य, दबावकारी समूह का अर्थ, राजनीतिक दलों तथा दबावकारी समूहों में अन्तर, भारतीय दबाव समूहों की विशेषताएँ

खण्ड (3)

अध्याय 11 : व्यक्ति एवं समाज

व्यक्ति तथा समाज का सम्बन्ध, व्यक्ति की समाज पर निर्भरता, मनुष्य पर समाज का प्रभाव, समाजीकरण, समाजीकरण का अर्थ एवं परिभाषाएँ, समाजीकरण की प्रक्रिया, समाजीकरण की विशेषताएँ, समाजीकरण की प्रमुख संस्थाएँ, व्यक्ति का समाजीकरण करने संस्थाएँ, संस्कृति का अर्थ एवं परिभाषाएँ, संस्कृति की विशेषताएँ, संस्कृति के प्रकार, संस्कृति का सामाजिक जीवन में महत्व, सभ्यता का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक नियंत्रण-प्रतिमान, मूल्य एवं मान्यताएँ, सामाजिक नियंत्रण की विशेषताएँ, सामाजिक नियंत्रण के उद्देश्य, सामाजिक नियंत्रण के अभिकरण के रूप में सामाजिक मूल्य की भूमिका, मूल्यों का महत्व

अध्याय 12 : सामाजिक स्तरीकरण एवं गतिशीलता

सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक स्तरीकरण की प्रमुख विशेषताएँ, सामाजिक स्तरीकरण के आधार, सामाजिक स्तरीकरण के स्वरूप, सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धान्त, सामाजिक स्तरीकरण के कार्य एवं महत्व, सामाजिक स्तरीकण के दोष, सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक गतिशीलता के स्वरूप, सामाजिक गतिशीलता की मात्रा

अध्याय 13 : सामाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं परिभाषाएँ

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ, सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख प्रतिमान, सामाजिक परिवर्तन तथा सांस्कृतिक परिवर्तन में अन्तर, सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख कारक, जनसंख्यात्मक कारक का अर्थ, जनसंख्या तथा सामाजिक परिवर्तन, जनसंख्यात्मक कारकों के प्रभाव का मूल्यांकन, सामाजिक परिवर्तन के सांस्कृतिक कारक, सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएँ

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

खण्ड (4)

अध्याय 14 : व्यावहारिक समाजशास्त्र का परिचय : समाजशास्त्र तथा सामाजिक समस्याएँ

व्यावहारिक समाजशास्त्र का अर्थ, व्यावहारिक समाजशास्त्र के उद्देश्य, व्यावहारिक समाजशास्त्र का योगदान, सामाजिक समस्या के तत्व एवं विशेषताएँ, सामाजिक समस्याओं के कारण, सामाजिक समस्याओं का समाधान, सामाजिक समस्याओं के निराकरण में बाधाएँ, सामाजिक समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन, सामाजिक परिवर्तन की दिशा तथा सामाजिक समस्याएँ, सामाजिक समस्याएँ तथा समाजशास्त्र, सामाजिक समस्याएँ तथा वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य, सामाजिक समस्याएँ तथा मानविकी परिप्रेक्ष्य

अध्याय 15 : उद्विकास तथा प्रगति

सामाजिक उद्विकास, सामाजिक उद्विकास की विशेषताएँ, सामाजिक उद्विकास के सिद्धान्त, सामाजिक उद्विकास के कारक, मानव समाज का उद्विकास, सामाजिक प्रगति का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सामाजिक प्रगति के लक्षण, प्रगति की दशाएँ, सामाजिक प्रगति की कसौटियाँ, उद्विकास तथ प्रगति में अन्तर, परिवर्तन तथा प्रगति

अध्याय 16 : समाजशास्त्र तथा सामाजिक विकास

समाजशास्त्र एवं विकास, समाजशास्त्र, सामाजिक नीति एवं क्रियान्वयन, नीतियों का क्रियान्वयन तथा मूल्यांकन

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

भारतीय समाज
(द्वितीय प्रश्नपत्र)

खण्ड (1)

अध्याय 1 : वर्ण

वर्ण का अर्थ, वर्ण–व्यवस्था की उत्पत्ति, वर्ण–व्यवस्था का आधार–जन्म अथवा कर्म, विभिन्न वर्णों के कर्त्तव्य (धर्म), वर्ण–व्यवस्था का महत्व, वर्ण–व्यवस्था के दोष

अध्याय 2 : आश्रम

आश्रम का अर्थ, आश्रम–व्यवस्था की उत्पत्ति, आश्रमों का विभाजन, ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम, आश्रमों का महत्व, आश्रम व्यवस्था के आधार भूत सिद्धान्त, आश्रम व्यवस्था का समाजशास्त्रीय महत्व

अध्याय 3 : कर्म

कर्म का अर्थ, कर्म तथा पुनर्जन्म का सिद्धान्त, कर्म और भाग्य, कर्म के सिद्धान्त का महत्व, कर्म सिद्धान्त के दोष

अध्याय 4 : धर्म

धर्म का अर्थ एवं परिभाषाएँ, धर्म के विविध रूप, हिन्दू धर्म और परिवर्तन

खण्ड (2)

अध्याय 5 : क्षेत्र-कार्य दृष्टि

क्षेत्रीय कार्य दृष्टि से तात्पर्य, ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता के उत्तरदायी कारण, भारत में किये गये क्षेत्रीय अध्ययनों के मुख्य विषय, क्षेत्र कार्य दृष्टि से किये गये क्षेत्रीय अध्ययनों का महत्व, शास्त्रीय दृष्टि तथा क्षेत्र कार्य दृष्टि का महत्व तथा अन्त: सम्बन्ध

अध्याय 6 : भारतीय समाज की संरचना एवं संयोजन गाँव एवं कस्बे

4

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

गाँव का अर्थ एवं परिभाषाएँ, गाँव की विशेषताएँ, भारतीय गाँव एक इकाई के रूप में, गाँवों के प्रकार, भारतीय गाँवों की सामाजिक संरचना, कस्बा की परिभाषा, कस्बा की विशेषताएँ

अध्याय 7 : नगर और ग्रामीण-नगरीय अनुबन्ध

नगर की अवधारणा, नगर का अर्थ एवं परिभाषाएँ, नगर (नगरीय समुदाय) की विशेषताएँ, भारत में नगर एवं नगरीकरण, नगरीय सामाजिक संरचना, भारतीय नगरीय समुदायों के संगठनात्मक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक पहलू, गाँव एवं नगर में पारस्परिक अन्तः क्रियाः अनुबन्ध

अध्याय 8 : जनजातियाँ

3

जनजाति की परिभाषा, जनजाति की विशेषताएँ, भारतीय जनजातियों का वर्गीकरण, भारत में जनजातियों का विवाह, विवाह के रूप, जीवन साथी चुनने के तरीके, जनजातियों में विवाह-विच्छेद, जनजातीय परिवार

अध्याय 9 : दलित

3

कमजोर वर्ग की अवधारणा, दलितों वर्ग, दलितों की निर्योग्यताएँ, दलितों का कल्याणः संवैधानिक व्यवस्थाएँ, दलितों अथवा अनुसूचित जातियों की वर्तमान समस्याएँ, अस्पृश्यता के सामाजिक दुष्परिणाम, अस्पृश्यता उन्मूलन में सरकार के प्रयत्न, अस्पृश्यता अधिनियम, 1955, अनुसूचित जातियों की वर्तमान स्थितिः एक मूल्यांकन, अस्पृश्यता निवारण के लिए सुझाव

अध्याय 10 : महिलाएँ

(1)

विभिन्न युगों में नारी की स्थिति, स्वतन्त्रता से पूर्व स्त्रियों की स्थिति, हिन्दू स्त्रियों की निम्न स्थिति के कारण, स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् महिलाओं की स्थिति, परिवर्तन के कारण, हिन्दू और मुस्लिम स्त्रियों की स्थिति की तुलना, स्त्रियों की स्थिति को सुधारने के लिए किए गए सरकारी प्रयास, प्रौढ़ महिलाओं के लिए कल्याण कार्यक्रम

अध्याय 11 : अल्पसंख्यक

4

अल्पसंख्यकों से अभिप्राय, भारत में अल्पसंख्यकों की श्रेणियाँ, भारत में धार्मिक अल्पसंख्यक, ईसाई अल्पसंख्यक, सिक्ख अल्पसंख्यक, भारत में भाषा पर आधारित अल्पसंख्यक, अल्पसंख्यकों की समस्याओं के समाधान हेतु सरकार द्वारा उठाये गये कदम, जनजातीय अल्पसंख्यक, जनजातीय समस्याएँ, जनजातीय कल्याण-कार्य

खण्ड (3)

अध्याय 12 : जाति व्यवस्था

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

जाति का अर्थ एवं परिभाषाएँ, जाति की विशेषताएँ, जाति व्यवस्था के प्रकार्य, जाति व्यवस्था का महत्व, जाति प्रथा की हानियाँ, जाति प्रथा की उत्पत्ति के सिद्धान्त, जाति व्यवस्था में परिवर्तन, जाति व्यवस्था में परिवर्तन के कारण, जाति प्रथा वर्ग में अन्तर, जाति और राजनीति, जाति व्यवस्था की वर्तमान संरचना, जाति का भविष्य

अध्याय 13 : नातेदारी

नातेदारी का अर्थ एवं परिभाषाएँ, नातेदारी के भेद, नातेदारी की श्रेणियाँ, सम्बन्ध संज्ञाएँ, नातेदारी की रीतियाँ, परिहार या विमुखता, परिहास के सम्बन्ध, भारत में नातेदारी व्यवस्था में क्षेत्रीय भिन्नताएँ, उत्तर और दक्षिण भारत की नातेदारी में तुलना, नातेदारी का समाजशास्त्रीय महत्व, नातेदारी व्यवस्था में परिवर्तन या बदलाव

अध्याय 14 : परिवार

परिवार की विशेषताएं, परिवार के प्रकार, परिवार के प्रमुख कार्य, भारतीय परिवार की विशेषताएँ, संयुक्त परिवार का अर्थ एवं परिभाषाएँ, संयुक्त परिवार के लक्षण, संयुक्त परिवार की रचना, संयुक्त परिवार के कार्य, भारतीय संयुक्त परिवार की संरचना, संयुक्त परिवार के गुण, संयुक्त परिवार के दोष

अध्याय 15 : विवाह के बदलते आयाम

(3)

विवाह की अवधारणा, विवाह का सामान्य अर्थ एवं परिभाषाएँ, हिन्दू विवाह के उद्देश्य, हिन्दू विवाह की प्रकृति एवं विशेषताएँ, विवाह के भेद, हिन्दू विवाह की विधियाँ, हिन्दू विवाह के नियम, हिन्दू विवाह का बदलता स्वरूप, मुसलमानों में विवाह, मुस्लिम विवाह की विशेषताएँ, ईसाइयों में विवाह, ईसाई विवाह में आधुनिक परिवर्तन

खण्ड (4)

अध्याय 16 : दहेज

(1)

दहेज का वास्तविक अर्थ, दहेज का परिभाषा, दहेज का इतिहास, दहेज अथवा दहेज-प्रथा के कारण, दहेज अथवा देहज-प्रथा के दुष्परिणाम, दहेज प्रथा खत्म करने के उपाय, दहेज प्रथा समाप्ति के कानूनी प्रयास

अध्याय 17 : घरेलू हिंसा

(1)

घरेलू हिंसा का अर्थ एवं परिभाषाएँ, घरेलू हिंसा के प्रकार, हिंसा की शिकार महिलाओं की विशेषताएँ, पारिवारिक हिंसा के अपराधकर्ता की विशेषताएँ,

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

घरेलू हिंसा के कारण, सरकार द्वारा घरेलू हिंसा को रोकने के प्रयत्न, घरेलू हिंसा को रोकने के उपाय

अध्याय 18 : विवाह-विच्छेद

(1)

तलाक या विवाह-विच्छेद की अवधारणा, विवाह-विच्छेद में वृद्धि के कारण, विवाह-विच्छेद के प्रकार्यात्मक पक्ष, विवाह-विच्छेद के अकार्यत्मक पक्ष, हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955, विवाह-विच्छेद के आधार

अध्याय 19 : अन्तः तथा अन्तर पीढ़ी संघर्ष

अन्तः पीढ़ी संघर्ष का अर्थ एवं परिभाषाएँ, अन्तः पीढ़ी संघर्ष के कारण, अन्तर-पीढ़ी संघर्ष का अर्थ एवं परिभाषाएँ, अन्तर-पीढ़ी संघर्ष के विभिन्न क्षेत्र, अन्तर-पीढ़ी संघर्ष के कारण, अन्तर-पीढ़ी संघर्ष को दूर करने के उपाय

अध्याय 20 : बुजुर्गों की समस्याएँ

(3)

बुजुर्गों (वृद्धों) की वर्तमान स्थिति, बुजुर्गों की प्रमुख समस्याएँ, बुजुर्गों की समस्याओं के कारण, बुजुर्गों के लिए कार्यक्रम एवं सरकारी नीति, बुजुर्गों की समस्याएँ दूर करने हेतु उपाय

अध्याय 21 : जातिवाद

(3)

जातिवाद का अर्थ एवं परिभाषाएँ, जातिवाद के विकास के कारक, जातिवाद के दुष्परिणाम, जातिवाद के निराकरण के उपाय, जातिवाद के निराकरण हेतु किये गये प्रयत्न, जाति और जातिवाद में अन्तर

अध्याय 22 : क्षेत्रवाद

क्षेत्रवाद का अर्थ एवं परिभाषाएँ, क्षेत्रवाद की प्रमुख विशेषताएँ, क्षेत्रवाद की समस्या के उदय के कारक, क्षेत्रवाद के प्रमुख दुष्परिणाम, क्षेत्रवाद को रोकने के उपाय

अध्याय 23 : सम्प्रदायवाद (3)

राष्ट्रीय एकीकरण का अर्थ एवं परिभाषाएँ, राष्ट्रीय एकीकरण के मुख्य आधार, भारत में राष्ट्रीयता का उदय, साम्प्रदायिकता अथवा सम्प्रदायवाद का अर्थ एवं परिभाषा, साम्प्रदायिकता अथवा सम्प्रदायवाद की विशेषताएँ, साम्प्रदायिकता के कारण, साम्प्रदायिकता के दुष्परिणाम, साम्प्रदायिकता के निवारण हेतु सुझाव

अध्याय 24 : भ्रष्टाचार एवं युवाओं में अशान्ति

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

भ्रष्टाचार का अर्थ एवं परिभाषाएँ, भ्रष्टाचार की विशेषताएँ, भ्रष्टाचार के कारण, भ्रष्टाचार के स्वरूप, भ्रष्टाचार के दुष्परिणाम, भ्रष्टाचार उन्मूलनः प्रयत्न एवं सुझाव

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur